"अँगना का अपने धनी से सम्बन्ध"

—कुमारी किरण भगत, जयपुर

आज तक करोड़ों ब्रह्माण्ड बन कर मिट चुके हैं लेकिन इस कलियुग के ब्रह्माण्ड का अपना विशेष महत्व है क्योंकि इस ब्रह्माण्ड में ऐसी अनोखी चीज आयी है जो न पहले कभी आयी थी और न ही आएगी। वो हैं श्री राजी तथा उनकी सखियां। इस ब्रह्माण्ड के लिए लाखों ऋषी मुनियों ने तपस्या की ताकि उनको 'श्री राजी' और उनकी सखियों के दर्शन हो पायें। हम पर धनी' की कितनी असीमित मेहर है कि हमने इस ब्रह्माण्ड में और वो भी 'निजानन्द सम्प्रदाय' में जन्म लिया है। हमें 'श्री राजी महाराज' ने अपनी पहचान कराने के लिए वाणी जैसी अद्भुत 'साखी' प्रदान की है, जिसके रास्ते से हम अपनी पहचान कर सकें। हम कौन हैं? यहां क्यों आए हैं? और हमें कहां जाना है? इन सब बातों को हम वाणी के माध्यम से जान सकते हैं। 'श्री राजी महाराज' ने वाणी में स्पष्ट लिखा है—

"तू कौन आयो इत क्योंकर,
कहां है तेरा वतन।
नार तू कौन खसम की,
दृढ़ कर कहो वचन।।"

हम अपने धनी की अंगना हैं, वह हमारा प्रियतम है। हमारा उससे सम्बन्ध पति और पत्नी जैसा है न कि दास और सेवक जैसा। हम स्पष्ट रूप से यह चौपाई वाणी में नित्य पढ़ते हैं— "धनी मेरा प्रभु विश्व का प्रगट्या प्रमाण।" लेकिन शायद हम समझते नहीं हैं क्योंकि यदि हम इसे समझते तो कभी भी अपने 'पिया' के दास न बनते। "धनी" ने तो अपनी पहचान कराने के लिए वाणी में स्पष्ट रूप से हर बातों के मायने खोले हैं लेकिन फिर भी हम न समझें तो दोष हमारा है वाणी का नहीं।

हम अपने 'धनी' की अँगना बनना नहीं चाहते यदि इस बात का उत्तर हम जानें तो लोग कहेंगे, हममें वह गुण ही नहीं हैं जो अँगना के होने चाहिए या इतने ऊँचे पद वाले 'श्री राजी' की हम अँगना कैसे हो सकते हैं, आदि-आदि। लेकिन मैं तो यही कहना चाहूँगी कि यदि हम अपने अन्दर अँगना वाले भाव लें तो

Nijanand App

अवश्य ही हमारे अन्दर 'रहनी' के बीज उत्पन्न होंगे क्योंकि जिस समय हम अपने आपको अँगना मानेंगे तो उस समय हमारा दिल कोई भी ऐसा कार्य करने को इजाजत नहीं देगा जिससे हमारे "पिया" दुखी हों।

यदि हम अपने अन्दर भाव ही दास दासियों वाले लायेंगे तो हम परमधाम के अन्दर कैसे जा सकते हैं क्योंकि 'श्री राजी महाराज' ने स्पष्ट लिखा है कि जिस भाव से मुझे कोई पुकारेगा मैं उसी भाव से उसके पास जाऊंगा।

"जाकी रही भावना जैसी"।

अपने धनी को कोई धोखा नहीं दे सकता। 'धनी न जायें धूत्यां किनसो, जो तुमको अनेक धुतार'। जब वाणी में यह स्पष्ट रूप से लिखा है कि परमधाम में श्री राजी तथा उनकी सखियों के अलावा कोई नहीं है फिर भी हम उनके दास बनना चाहते हैं। जबकि हमारी भक्ति 'पतिव्रता भक्ति' है। यह भक्ति पति और पत्नी के बीच ही हो सकती है, मालिक और दास के बीच नहीं होती।

परमधाम की आत्माओं ने यहां आकर तन धारण किए हुए हैं शरीर से चाहे कोई स्त्री है या पुरुष लेकिन जब तक हम अपने अन्दर स्त्री भाव नहीं लायेंगे हम उनकी अँगना नहीं बन सकते। जो श्री राजी की अँगना होगी उसकी चाहे कोई जुबान ही क्यों न काट ले लेकिन उनकी जुबान से कभी 'पिया या 'धनी' के अलावा कुछ निकल ही नहीं सकता। जो अपने 'पिया' के दास बनते हैं उनकी जुबान से कभी प्रभु तथा महाप्रभ जैसे शब्द हट ही नहीं सकते। आदरणीय 'सुन्दर साथ जी' यदि हम प्रतिदिन वाणी पढ़कर भी यह गल्ती करें तो हमारे धनी इससे कितने दुखी होंगे। अतः हमें इस पर अवश्य विचार करना चाहिए।

'आदरणीय सुन्दर साथ जी' यदि आपको इसमें कोई त्रुटि लगे तो अपने चरणों की रज समझ कर क्षमा करना।

Nijanand App